* राज्य की उत्पत्ति का शक्ति सिद्धान्त की व्याख्या

शक्ति सिद्धान्त के अनुसार राज्य दैवीय नहीं है. वरन उच्चतर शारीरिक शक्ति का परिणाम है। राज्य का उदय बलवानों द्वारा कमजोरों को अपने अधीन कर लेने से हुआ है। इस सिद्धान्त के समर्थकों का विश्वास है कि न केवल शक्ति द्वारा ही राज्य की उत्पत्ति हुई वरन वह शक्ति के आधार पर ही जीवित भी है।

सिद्धान्त के समर्थक मानते है कि मनुष्य स्वभावत: सामाजिक प्राणी होने के बावजूद झगड़ालू भी है। मनुष्यों में अधिकारों के लिए इच्छा होती है. अत: वह कमजोर मनुष्यों को अपने अधीन कर उन पर शासन करना चाहता है। मानव विकास के प्रारम्भिक चरण में जिसकी लाठी उसकी भैंस ही कानून था। बलवानों ने कमजोरों को अपना दास बना लिया।

* शक्ति सिद्धान्त की विशेषताएँ :—

① शक्ति सिद्धान्त के अनुसार प्रकृति और समाज का मूल आधार शक्ति है और शक्ति की ही न्याय है।

② राज्य की उत्पत्ति शक्ति द्वारा ही हुई है। सफल युद्ध ने राज्य और राजा की स्थापना की है।

③ शक्ति सिद्धान्त के अनुसार "युद्ध मनुष्य की सर्वोत्तम शक्ति का प्रतीक है।"